Received: May '22
Revised:
Accepted: June '22

© 2022 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

राजी सेठ की रचनाओं में नारी चिंतन

शशि मिश्रा
अतिथि विद्वान, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह विश्वविद्यालय, रीवा मध्यप्रदेश

प्राचीन काल से ही साहित्य में नारी किसी न किसी रूपों में व्यक्त हुई है। कभी वह सीता बनकर तो कभी द्रोपदी। पुरूष प्रधान संस्कृति में उसके अस्तित्व को लेकर कई प्रश्नों ने सवाल खड़े कर दिए हैं। प्रत्येक क्षेत्र में उसका शोषण नजर आया है। लेकिन समय के साथ स्त्री ने भी अपने अस्तित्व को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। इसका गवाह नारी का इतिहास है। इस बात की पुष्टि होती है राजी सेठ के कथा साहित्य में मुख्यरूप से सबसे अधिक दृष्टित होती है। उनका उपन्यास साहित्य स्त्री की संघर्षशील यातना को प्रस्तुत करता है, वहीं कहानियां तो ऐसे स्वरूप को नवीनता प्रदान करती हैं, जिनमें स्त्री का जीवन किसी भी ऐसी परिस्थितियों को नहीं आंका गया है।

महानगरीय जिंदगी तथा आर्थिक दबावों के बीच उभरते नये मूल्यों के संघर्ष में जूझती नारी आज के साहित्यकारों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इसलिए समकालीन कहानी की मूल्य संवेदना में रचा–बसा नारी जीवन एकांगी नहीं, वैविध्यपूर्ण है। यह धार्मिक–नैतिक आदर्शों, सामाजिक या मार्क्सवादी सिद्धांतों की परिधि से अलग सिर्फ जीवन और उसके बीच कुलबुलाते यथार्थ का साक्षी है। स्त्री–पुरूष के टूटते–बनते और बन–बन कर पुनः बिगड़ते संबंधों, प्रेम–विवाह, नौकरी, अंधविश्वासों, रूढ़ियों आदि के परिप्रेक्ष्य में रेखांकित किया जा सकता है। यह सभी तथ्य राजी के कथा कर्म में विविधता के साथ प्रस्तुत हुए हैं–''निष्कवच का यह दृश्य–हम या हमारी पीढ़ी क्यों उस इतिहास की कैदी बनी रहे। हमारी स्मृति में वह नहीं है तो नहीं है। हमारे लिए संसार वहीं से शुरू होता है, जहाँ से हम शुरू हुए हैं। अब यह बाते सुना–सुनाकर जबरदस्ती हमारी अवेयरनेस में ठूँसी नहीं जा सकती। इस जुए को उठाए–उठाए चलना मुश्किल हैं।''1

आधुनिक नारी की सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक स्थिति, पति–पत्नी सम्बंध तथा उसकी स्थिति एवं गति को अपने अनुभव के दायरे के अन्तर्गत जिन महिला साहित्यकारों ने साहित्य सृजन किया है उनमें राजी का नाम हिंदी साहित्य जगत् में बड़े आदर से लिया जाता है। आज वर्तमान युग 'महिला उत्थान युग' माना जाता है। आज की नारी अबला नहीं बल्कि सबला है।

परम्पराओं, रीति रीवाजों, संस्कारों एवं सामाजिक बन्धनों में जकड़ी नारी आज हर क्षेत्र में पुरूष के कंधे से कंधा मिला रही है, चाहे क्षेत्र राजनीति का हो, या सामाजिक, साहित्यिक या वैज्ञानिक, हो। हर जगह आज नारी उच्च पदों पर विराजमान है। अपनी जीविका अपने पति के गुजर जाने के पश्चात् भी बहुत ही तरीके से निभा सकती है, जिसका स्पष्ट उदाहरण राजी का उपन्यास 'तत्सम' है। वसुधा एक विधवा नारी है, परंतु अपने जीवन को वह किसी भी परिस्थिति खुद को कमजोर नहीं मानती है–''औरत हूँ तभी तो....जरा न्याय तो देखो अपने भगवान का। थकुआ आदमी अकेला रह जाये तो तूफान खड़ा हो जाए और औरत के लिए पत्ता भी न हिले जबकि वह हर तरह से ज्यादा मजबूर है। ...मैं तो कहूँगी, तुम्हारे भगवान की दुनिया में इंसान नहीं है कोई। दो धर्म हैं...दो जातियाँ ....ओर दोषी के लिए अलग–अलग तरह के नियम।''2

आज वर्तमान समाज में नारी के स्थान एवं उसकी यथार्थ स्थिति का अंकन उन्होंने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में किया है। अतः नारी के विविध रूपों के उजागर किया है। समाज और संस्कृति का रूप सदा एक–सा नहीं रहता है, राजी का कथा साहित्य इस तथ्य को परिभाषित करने में सफल हुआ है। परिवेशगत दबाव उसमें बदलाव करते रहते हैं।

भारत में आदिकाल से महिलाओं का अपना अस्तित्व रहा है। अंतर केवल यह है कि पहले वे अधिकांश रूप में ही सीमित रहती थीं। आज समाज में उनकी सक्रिय भूमिका है। समय चक्र ने उसके कार्यक्षेत्र को बदल दिया है। वह घर की चार दीवारी से निकलकर समाज के विशाल प्रांगण में आकर खड़ी हैं। तब से समस्याओं का सामना करती आयी।

कहानियों में भी लेखिका ने बहुत ही स्पष्टतः नारी जीवन को अनेक रूपों में प्रस्तुत किया है। राजी ने ऐसी स्त्रियों की पीड़ा को उजागर किया है, जो अपने जीवन में दो धारी तलवार वाली जीवनशैली को जीने में विवश हैं–वह कितनी सदियों से उसके पौरूष के पीप को ले रही है अपने भीतर ...क्या वैसे ही कितने और पुरूष बनाने को–झूठे, धूर्त और दयनीय।''3

हिन्दी कथा–साहित्य में नारी–विषय का भूमंडलीकरण हो गया है, ग्लोबलाईजेशन एवं बाजारवाद, लिब्रलाइजेशन ने स्त्री लेखन कर्म में सहायता दी, किन्तु असली जमीन तैयार की, उससे प्रभावित तथा निर्मित अन्यान्य विसंगतियों ने। इन्होंने सृजन धर्मिता के लिए बेहतर हरी परन्तु खुरदुरी भूमि तैयार की। परिणामस्वरूप हजारों की तादात में लेखिकाओं का कथा–साहित्य में योगदान बड़ा

है। जिससे महिला सशक्तीकरण को, जनजागृत–नारी चेतना को, गतिशील बनाने में पुरूष कथाकारों की, तुलना में लेखिकाओं ने अपनी संवेदनशीलता के साथ अभूतपूर्व अभिव्यक्ति दी है। जिनमें से कुछ नाम विश्व पटल पर हैं, राजी सेठ की विभुति भी उनमें से एक है।

राजी के विचार में यह कहना बिल्कुल लिंग धर्मी सरोकारों को बढ़ावा देता है, कि एक महिला का दर्द महिला ही समझ सकती है, क्योंकि यही मानसिकता पुरूष के समक्ष नारी को कमतर बनाती है, जिसके विषय में वह कहती हैं–''इतना तो वे अवश्य स्वीकार करती हैं कि स्त्रियों के लिखने से अनुभव के बहुत से ऐसे नए क्षेत्र केन्द्र में आ गये हैं, जो नारी अनुभव के दायरे में होने के कारण विशिष्ट हैं। उनका चित्रण भी लेखकों ने निजता और अंतर्दृष्टि से किया है।''4

साहित्य के माध्यम से स्त्री ने भी अपने विचारों के द्वारा विसंगतियों–विडम्बनाओं को समाज के सामने लाने का हौसला दिखाया। लेखनी को हाथ में थाम कर नारी ने इस बात का एहसास किया कि वह अपने विचारों की धार को समाज के सामने लाकर नारी–मुक्त के सपने को सार्थकता का अमली जामा पहना सकती है। स्त्रियों और पुरूषों के लेखन की चर्चा होने पर एक कौतूहल सा दिमाग में बनने लगता है। लिंग के आधार पर उनके लेखन को स्त्री–पुरूष के साँचे में समाहित करने का प्रयास किया जाने लगता है।

वास्तविकता में देखा जाये तो स्त्री लेखन और पुरूष लेखन को तुलनात्मक रूप में न तो अध्ययन का विषय बनाया जा सकता है और न ही यौनिक आधार पर किसी अन्तर की अपेक्षा की जा सकती है। अन्तर और तुलना की अपेक्षा के अतिरिक्त इन दोनों के लेखन को इस आधार पर आकलित करना ही गलत होगा। इक्कीसवीं सदी में नारी पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त कर रही हैं। राजी सेठ ने स्त्री विमर्श के पथ पर जो लेखन अपने साहित्य में किया है, वह उनका नारी विमर्श के प्रति विवेकशील दायित्व को समझाता है। इस कारण उनकी कहानियों एवं उपन्यासों साहित्य तमाम जगह उनका स्वरूप अत्यधिक महत्वपूर्ण रूप से प्रदर्शित हुआ है।

संदर्भ सूची

1. निष्कवच–पृ0 21, राजी सेठ, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 1997
2. तत्सम–पृ0 29, राजी सेठ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1983
3. यह कहानी नहीं–पृ0 75, राजी सेठ, कहानी संग्रह–भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, संस्करण 1999
4. राजी सेठ कथा दृष्टि एवं दृष्टि–पृ0 5, डॉ. कश्मीरीलाल, नेशनल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, संस्करण 2006
5. स्त्री विमर्श समाज और साहित्य, क्षमा शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012
6. स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, संजय गर्ग, सामयिक प्रकाशन, संस्करण 2012
7. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, वैशाली देशपांडे, कानपुर संस्करण 2007